P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-9* May- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मौर्य युग के आधुनिक इतिहास–लेखन में बौद्ध स्रोत सामग्री का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विकास चौधरी
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान

सारांश

मौर्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन के लिए साहित्यिक स्रोत सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इन साहित्यिक स्रोत सामग्री में से बौद्ध साहित्यिक स्रोतों से हमें मौर्यवंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक के जीवन के संबंध में सर्वाधिक सूचनाएँ प्राप्त होती है जो मौर्य युग के आधुनिक इतिहास–लेखन में उपयोगी सिद्ध होती है। इन बौद्ध स्रोतों में अट्ठकथा, दीपवंस व महावंश ग्रंथ, अशोकावदान व दिव्यावदान तथा आर्यमंजुश्रीमूलकल्प आदि ग्रंथो को सम्मलित किया जाता है। चीनी यात्रियों के द्वारा बौद्ध धर्म व दर्शन तथा धार्मिक उद्देयश्यों की जानकारी के लिए भारत की यात्रा की तथा यात्रा प्रवास के समय ऐसी अनुश्रुतियों की जानकारी प्राप्त की जो मौर्य शासकों से सम्बंधित थी। इन अनुश्रुतियों के द्वारा भी मौर्य इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द : आधुनिक इतिहास लेखन, बौद्ध साहित्यिक स्रोत, बौद्ध रूपी सिंहली ग्रंथ, सिंहल अट्ठकथा, दीपवंस, महावंश, दिव्यावदान, मौर्य प्रशासन, बौद्ध संगीति, चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, फाह्यान, हेनसांग, पाटलीपुत्र, परिशिष्टपर्वण, मौर्य कला।

प्रस्तावना

इतिहास समाज का दर्पण है किसी देश अथवा जाति के उत्थान–पतन, उत्कर्ष–अपकर्ष आदि की पूर्ण व्यवस्था इतिहास के पन्ने पलटने पर हमकों भली–भाँति विदित हो जाती है। किसी देश को नष्ट करना हो तो उसके इतिहास और साहित्य को नष्ट कर दो वह शताब्दियों तक नहीं पनप सकेगा।

19वीं शताब्दी मुख्य रूप से तथ्यों की उपयोगिता पर बल देती है। ऐतिहासिक दृष्टि से मौर्य काल का न केवल राजनैतिक महत्त्व के लिए वरन् यह इतिहास लेखन की नवीन विधाओं के प्रचलन के लिए प्रसिद्ध रहा है। मौर्यकालीन पुरातात्त्विक एवं साहित्य स्रोतों की उपलब्धता लेखनीय दृष्टिकोण एवं देश, काल और परिस्थिति के अनुसार विभिन्न इतिहासकारों द्वारा विभिन्न परिपेक्ष्य में लेखन किया गया है। इतिहास लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या स्रोत–सामग्री का अभाव दृष्टिगत होता है परन्तु मौर्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन हेतु इतिहासकारों के समझ प्रचुर साहित्यिक स्रोत सामग्री उपलब्ध है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में स्रोत सामग्री का अभाव सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है, परन्तु मौर्य काल से संबंधित स्रोतों का अवलोकन करके बौद्ध स्रोतों के आधार पर नंदों का उन्मूलन, चन्द्रगुप्त द्वारा मौर्य साम्राज्य की स्थापना, बिन्दुसार तथा अशोक, अशोक का धम्म, बौद्ध संगीति आदि की जानकारी प्राप्त करके बौद्ध स्रोतों के आधार पर मौर्य युग का आधुनिक इतिहास–लेखन करना इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य होगा।

साहित्यावलोकन

मौर्य युग के आधुनिक इतिहास लेखन पर सर्वप्रथम शोध निबन्ध प्रकाशित करने का कार्य डॉ. शंकर गोयल ने अपने ग्रंथ 'हिस्ट्री राइटिंग ऑफ अर्ली इण्डिया', जोधपुर, 1996, के अध्याय 3 व 4 में किया है।

श्रीराम गोयल के ग्रंथ 'प्राचीन भारत' (320 ई. तक), जोधपुर, 2007 से भी हमें मौर्यकाल के आधुनिक इतिहास–लेखन संबंधित विभिन्न पहलुओं का विवेचनात्मक वर्णन प्राप्त होता है।

मौर्य काल से संबंधित डी.एन.झा की पुस्तक 'आरंभिक भारत का संक्षिप्त इतिहास' है जो मनोहर पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा 2009 में प्रकाशित है प्रस्तुत ग्रंथ में बौद्ध स्रोत सामाग्री के आधार पर सामाजिक व आर्थिक इतिहास का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

रोमिला थापर द्वारा लिखित ग्रंथ 'अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन' के प्रथम अध्याय में मौर्य काल से सम्बन्धित बौद्ध साहित्यिक स्रोतों के आधार पर मौर्य शासक अशोक के शासन काल का राजनैतिक एव सामाजिक दृष्टिकोण से विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

रोमिला थापर ने अपने ग्रंथ 'पूर्वकालीन भारत' (प्रारम्भ से 1300 ई. तक), दिल्ली, 2015, के अध्याय 6 में मौर्यकालीन ऐतिहासिक, सामाजिक व आर्थिक इतिहास से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का बौद्ध स्रोत सामग्री के आधार पर विवेचनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है।

रामशरण शर्मा द्वारा लिखित ग्रंथ 'प्रारंभिक भारत का परिचय', हैदराबाद, 2018, के अध्याय 19 में बौद्ध साहित्यिक स्रोतों के आधार पर मौर्य शासन–व्यवस्था के महत्त्व का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उपरोक्त मौलिक स्रोतों, द्वितियक स्रोतों एवं अन्य अध्ययन सामग्री के आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र में आधुनिक इतिहास लेखन की दृष्टि से मौर्यकालीन बौद्ध स्रोतों की तथ्य परख विवेचना की गई है।

बौद्ध साहित्यिक स्रोत

मौर्यकालीन इतिहास पर प्रकाश डालने वाले बौद्ध साहित्यिक स्रोतों को दो भागों में विभक्त किया जाता है –

1. दक्षिण परम्परा का साहित्य।
2. उत्तरी परम्परा का साहित्य।

दक्षिण परम्परा का साहित्य

इस परम्परा में उस साहित्य को सम्मलित किया जाता है जिसे भारत के अन्तर्गत लंका में रचित किया गया हो, जिसमें प्राचीनतम बौद्ध रूपी सिंहली ग्रंथो को सम्मलित किया गया है।[1] जिसमें बताया गया है कि अशोक ने लंका में अपने प्रतिनिधियों को भेजा था जिनका मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार करना था। इन ग्रंथो से हमें अशोक द्वारा स्थापित विहारों की जानकारी प्राप्त होती है इनसे ज्ञात होता है कि अशोक ने महाविहार तथा उत्तर विहार नामक दो विहारों की स्थापना अनिरुद्धपुर नामक नगर में करवायी थी। हमें मौर्य साम्राज्य के इतिहास व लंका में बौद्ध धर्म के प्रवेश की जानकारी भी 'सिंहल अट्ठकथा' व 'उत्तर विहार अट्ठकथा' नामक ग्रंथो से प्राप्त होती है जिनकी रचना इनके स्थविरों द्वारा की गई थी।

सिंहल अट्ठकथा व उत्तर विहार अट्ठकथा नामक ग्रंथो को आधार मानकर सम्भवतः दीपवंस व महावंश नामक ग्रंथो की रचना की गई होगी, क्योंकि यह अट्ठकथा ग्रंथ वर्तमान समय में उपलब्ध नही है। दीपवंस व महावंश नामक ग्रंथो को मूल सामग्री माना जाता है। जिनकी रचना पाली भाषा में की गई थी। दीपवंस ग्रंथ की रचना लगभग चौथी शती ई. में व महावंश ग्रंथ की रचना पांचवी–छठी[2] ई. में की गई थी जिनसे हमें अशोक का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

महावंश ग्रंथ के अनुसार अशोक ने राज्य पर अधिकार करने के चार वर्ष बाद पाटलीपुत्र में अपना राज्याभिषेक करवाया था जो महात्मा बुद्ध के निर्वाण के 218 वर्ष बाद हुआ था। अशोक के राज्यारोहण व राज्याभिषेक के मध्य चार वर्ष के अंतराल का कारण मुख्यतः अशोक द्वारा अपने भाईयों के विरूद्ध संघर्ष रहा होगा। परन्तु आधुनिक इतिहासकार स्मिथ, भण्डारकर, मुकर्जी[4] ने अपने भाइयों के साथ संघर्ष की कथा को विश्वसनीय नहीं माना है। स्मिथ[5] का मत है कि महावंश में वर्णन है कि अशोक ने अपना राजसिंहासन प्राप्त करने हेतु अपने 99 भाईयों की हत्या की थी यह कथन मूर्खतापूर्ण दृष्टिगत होता है। यद्यपि दिव्यावदान की कथा कुछ सत्य प्रतीत होती है, जिसके अनुसार अशोक और उसके सबसे बड़े भाई सुसीम में राज्य के उत्तराधिकार को लेकर संघर्ष हुआ था।[6]

बौद्ध परम्परानुसार तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलीपुत्र में दीपवंस ग्रंथ के अनुसार महापरिनिर्वाण के 236 वर्ष बाद तथा महावंश ग्रंथ के अनुसार अशोक के अभिषेक के सत्रहवें वर्ष में हुई थी। इस संगीति का अध्यक्ष मोग्गलिपुत्त तिस्स था परन्तु कुछ ग्रंथो में यह श्रेय उपगुप्त को दिया गया है। ऐसी मान्यता है कि मोग्गलिपुत्त तिस्स तथा उपगुप्त एक ही व्यक्ति के नाम होगें।[7] इस संगीति द्वारा यह प्रयास किया गया कि बौद्ध सम्प्रदायों के मतभेदों को दूर कर सही सिद्धांतों का निर्माण किया जाये। इस संगीति के कारण बौद्ध धर्म में उत्साह का संचार हुआ था तथा देश में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु अनेक प्रचारक भेजे गये थे[8] जिनका वर्णन हमें दीपवंस व महावंश ग्रंथो से प्राप्त होता है जो निम्न था–

	देश		**प्रचारक–मण्डल का प्रमुख**
1.	कश्मीर गन्धार	–	मज्झन्तिक (मध्यान्तिक)
2.	महिसमण्डल	–	महादेव
3.	वनवासी / वनवास	–	रक्खित / रक्षित
4.	अपरन्तक / अपरान्तक	–	धम्मरक्खित / धर्मरक्षित
5.	महारट्ठ / महाराष्ट्र	–	महाधम्म रक्खित / महाधर्मरक्षित
6.	योनलोक / यवनदेश	–	महारक्खित / महारक्षित
7.	हिमवन्त प्रदेश	–	मज्झिम
8.	सुवर्णभूमि	–	सोण और उत्तर
9.	लंका द्वीप	–	महेन्द्र, सम्बल, भद्रशाल आदि[9]

इन प्रदेशों में से लंका द्वीप, सुवर्ण भूमि, और यवन देश अशोक के साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं थे तथा शेष लगभग समस्त देश मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत थे।

मौर्य से संबंधित अनेक कथाओं की जानकारी हमें महावंश टीका नामक ग्रंथ से प्राप्त होती है जिसकी रचना महावंश नामक ग्रंथ को आधार मानकर की गई थी। महावंश टीका नामक ग्रंथ को वंसत्थप्पकासिनी भी कहाँ जाता है।[3] हमें बोधिवृक्ष की कथाओं का वर्णन उपतिस्म नामक भिक्षु द्वारा रचित ग्रंथ महाबोधिवंश से प्राप्त होता है। इस ग्रंथ में बताया गया है कि महात्मा बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी तथा अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार भी इसी बोधिवृक्ष के माध्यम से किया था।

चन्द्रगुप्त–चाणक्य की कथा का वर्णन हमें महावंश (कम्बोडियायी महावंश) नामक ग्रंथ से प्राप्त होता है जिसकी रचना मोग्गल्लान के द्वारा की गई थी। मिलिन्दपञ्हों नामक ग्रंथ की रचना पाली भाषा में की गई है जिससे हमें चन्द्रगुप्त मौर्य व नंदों की जानकारी तथा यवन शासक मिनेण्डर व बौद्ध विद्वान नागसेन के मध्य वार्तालाप का वर्णन भी प्राप्त होता है।

उत्तरी परम्परा का साहित्य

इस परम्परा में वह साहित्य सम्मलित है जिनकी रचना संस्कृत भाषा में की गई थी। उत्तरी परम्परा के साहित्य में नेपाल से प्राप्त 'दिव्यावदान' नामक ग्रंथ प्रमुख है। इस ग्रंथ से हमें नंद–चन्द्रगुप्त–चाणक्य से संबंधित वर्णन व अशोक के विषय संबंधित जानकारी प्राप्त होती है। इस ग्रंथ का एक भाग 'अशोकावदान' कहलाता है जिसमें अशोक के व्यक्तित्व व अशोक के धम्म की परिभाषा की जानकारी प्राप्त होती है।

दिव्यावदान नामक ग्रंथ से जानकारी प्राप्त होती है कि अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था तथा इसके उपरान्त उन स्थलों की यात्रा की थी जिनका संबंध बौद्ध धर्म से था। अशोक ने बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्रा अपने राज्याभिषेक के दस वर्ष बाद प्रारम्भ की तथा वह सर्वप्रथम सम्बोधि की यात्रा पर गया था। अशोक ने अपने राज्याभिषेक के बीसवें वर्ष में भगवान् बुद्ध के जन्म स्थल की यात्रा की थी तथा अशोक ने कनकमुनि बुद्ध के स्तूप के दर्शनार्थ यात्रा किये जाने का वर्णन भी मिलता है। अशोक ने इस तीर्थ स्थल की यात्रा प्रवास के दौरान लुम्बिनी नामक ग्राम को बलि नामक कर से मुक्त कर दिया था।[11] दिव्यावदान नामक ग्रंथ से ही हमें जानकारी प्राप्त होती है, अशोक ने जिन तीर्थ स्थलों की यात्रा की थी उस समय अशोक के बौद्ध आचार्य उपगुप्त ने सहायता प्रदान की थी। इतिहासकार स्मिथ ने भौगोलिक सुविधाओं के अनुसार अशोक की यात्राओं का क्रम लुम्बिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ, श्रावस्ति, बोधगया तथा कुशीनगर माना है।[12]

उत्तरी बौद्ध परम्पराओं से संबंधित विश्लेषणात्मक अध्ययन[13] आधुनिक इतिहासकारों ने अपनी रचनाओं में भी किया है इसमें प्रिलुस्की की रचना 'ल लेजंद दी ल एंपरर अशोक' प्रमुख है। इसके पश्च्यात् एस. मुखोपाध्याय ने कुछ अतिरिक्त पाठों के संदर्भ में अशोकावदान का संपादन किया था। इसी संस्करण का प्रयोग स्ट्रांग ने एक नवीन कृत्ति की रचना और अनुवाद के लिए किया है।[14]

बौद्ध साहित्य में 'आर्यमंजुश्रीमूलकल्प' नामक ग्रंथ का भी महत्वपूर्ण योगदान है।[15] जिसकी रचना पौराणिक शैली पर संस्कृत भाषा में 1005 श्लोकों में की गई है। जिनसे हमें मौर्य काल (चन्द्रगुप्त मौर्य व चाणक्य के साथ–साथ बिन्दुसार) से लेकर आठवीं शताब्दी तक के शासकों का वर्णन प्राप्त होता है।[16]

मौर्यो का वर्ण

मौर्यकालीन आधुनिक इतिहास लेखन के समय विद्वानों के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण चुनौती मौर्यों के वर्ण को लेकर विद्यमान थी। परन्तु हमें बौद्ध साहित्य से जानकारी प्राप्त होती है कि मौर्य मूलतः क्षत्रिय वर्ण के थे। चन्द्रगुप्त जो मौर्य वंश का संस्थापक था वह पिप्फलिवन या मोरिय नगर की मोरिय जनजाति में उत्पन्न हुआ था, यह जानकारी हमें महावंश नामक बौद्ध ग्रंथ से प्राप्त होती है। मोरिय जाति का वर्णन बौद्ध ग्रंथ 'महापरिनिब्बानसुत' से भी प्राप्त होता है जिसमें वर्णित है कि बुद्ध के परिनिर्वाणोपरान्त मल्लों के पास संदेश भेजा गया था कि भगवान बुद्ध की भाँति हम भी क्षत्रिय है।

महाबोधिवंश नामक ग्रंथ से हमें चन्द्रगुप्त के वर्ण की भी जानकारी प्राप्त होती है इस ग्रंथ में वर्णित है कि चन्द्रगुप्त मोरिय जाति का क्षत्रिय तथा राजाओं के कुल से उत्पन्न (नरिन्दकुल) है। दिव्यावदान नामक बौद्ध ग्रंथ में बिंदुसार व अशोक को भी क्षत्रिय बताया गया है। आधुनिक इतिहासकार राधाकुमुद मुकर्जी,[17] लाहा,[18] हेमचन्द्र रायचौधुरी[19] आदि इतिहासकारों ने दिव्यावदान नामक ग्रंथ का समर्थन करते हुयें अपना मत प्रस्तुत किया है कि मौर्य पिप्फलिवन की मोरिय नामक क्षत्रिय जाति के सदस्य थे। मौर्य शासकों के द्वारा स्वयं के नाम का सम्बन्ध मोर पक्षी से भी मानते हैं। मोरिय जाति का यह नाम टॉटमिस्मिक था जिसका संबंध मोर[20] या म्यूर शब्द से हैं। बुद्धघोष ने बताया है कि उनके राज्य में म्यूरों की बहुलता थी इस कारण मोरियों नाम पड़ा था। बुद्धघोष के इस वर्णन का प्रमुख आधार महापरिनिब्बानसुत्तन्त की टीका है।

मौर्य प्रशासन

किसी भी साम्राज्य के संचालन के लिए प्रशासनिक व्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। दिव्यावदान नामक ग्रंथ से हमें मौर्य प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है। इस ग्रंथ के अनुसार बिंदुसार के समय प्रशासनिक कार्यो हेतु एक सभा विद्यमान थी जिसमें मंत्रियों की संख्या 500 थी। इस प्रशासनिक जानकारी का समर्थन आधुनिक इतिहासकार हेमचन्द्र रायचौधुरी व तारानाथ ने भी किया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्टपर्वण नामक बौद्ध ग्रंथ से हमें बिंदुसार की शासन व्यवस्था, मंत्रीपरिषद् तथा सुबन्ध नामक मंत्री का वर्णन प्राप्त होता है। दिव्यावदान के अनुसार बिंदुसार के समय तक्षशिला निवासियों के द्वारा दूसरी बार विद्रोह किया गया था जिसका राजकुमार सुसीम दमन करने में असफल रहा था।[21]

चीनी यात्रा वृतान्त

चीनी यात्री हेनसांग, फाह्यान व इत्सिग मूलतः बौद्ध धर्म व दर्शन से संबंधित थे तथा इन यात्रियों ने धार्मिक भावना के कारण ही भारत की यात्रा की थी जिसकी जानकारी हमें बौद्ध साहित्य से प्राप्त होती है। चीनी बौद्ध यात्री हेनसांग ने सातवीं सदी में भारत की यात्रा की थी। इसने अपने स्मरणों में राजग्रह, श्रावस्ति तथा अन्य स्थानों पर स्थित स्तंभो का वर्णन किया है। मौर्यकालीन कला की दृष्टि से यह स्तम्भ अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिनमें से कुछ स्तम्भों पर सम्राट के आदेश भी उत्कीर्ण है। यह स्तम्भ वर्तमान समय में उपलब्ध नही है।[22] चीनी बौद्ध भिक्षु फाह्यान भी भारत की यात्रा पर आया था जिसने चौथी सदीं में बौद्ध ग्रंथो का भारत में संग्रह किया था। इसके यात्रा वृतान्त से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि संकिसा में एक सिंह स्तम्भ तथा पाटलीपुत्र के समीप एक लेख स्तम्भ स्थित थे,[23] परन्तु यह वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं है। यह स्तम्भ वर्तमान समय में स्थित नहीं है, इस कारण सम्भवतः यह प्रतीत होता है कि यह पत्थर की अपेक्षा कम मजबूत लकड़ी जैसे पदार्थ पर उत्कीर्ण करवाये गये थे जो साम्राज्य के विभिन्न भागों में स्थित थे[24] परन्तु यह वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं रहे।

निष्कर्ष

सारांशतः मौर्य युग के आधुनिक इतिहास लेखन में बौद्ध सामग्री का अविस्मरणीय योगदान है। इन स्रोतों के आधार पर चन्द्रगुप्त–चाणक्य की कथा तथा मौर्यो की वर्ण–व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। बिंदुसार के समय की प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी भी इन्हीं स्रोतों से प्राप्त होती है जिसका समर्थन आधुनिक इतिहासकारों के द्वारा भी किया गया है। अशोक द्वारा बौद्ध धर्म का विस्तार, बौद्ध तीर्थस्थलों की यात्रा, बोधिवृक्ष का वर्णन, बौद्ध संगीति व चीनी यात्रियों द्वारा विभिन्न स्थानों, मौर्य कला तथा स्तंभों की जानकारी बौद्ध स्त्रोतों से दृष्टिगत होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गोयल, शंकर : प्राचीन भारत का आधुनिक इतिहास–लेखन, जोधपुर, 2000, पृ. 73*
2. *गायगर, डब्ल्यू. : दि दीपवंस एंड महावंश, कोलंबो, 1908, पृ. 26*
3. *भण्डारकर, डी आर. : अशोक, कलकत्ता, 1925, अध्याय 1*
4. *मुकर्जी, आर. के. : अशोक, लंदन, 1928, पृ. 4–8*
5. *स्मिथ, वी.ए. : अशोक, ऑक्सफोर्ड, 1924, अध्याय 1*
6. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 437*
7. *जीन, शीलुस्की : दि लीजेण्ड्स ऑव एम्परर अशोक इन इण्डियन एण्ड चाइनीज टैक्स्ट्स, कलकत्ता, 1967*
8. *बोंगार्ड–लेविन, जी.एम. : मौर्यन इण्डिया, नई दिल्ली, 1985, पृ. 344 – 362*
9. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 475–489*
10. *आगे, गायगर : महावंश, लंदन, 1908, पृ. 11*
11. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह, 1, जयपुर, 1982, पृ. 118*
12. *स्मिथ, वी.ए. : अर्ली हिस्ट्री ऑव इण्डिया, ऑक्सफोर्ड, 1924, पृ. 167*
13. *विश्वास, डी. के. (अनु.) : दि लिजेंड ऑफ एंपरर अशोक, कलकत्ता, 1976, पृ. 48*
14. *पालेट, जी (सं.) : इंडिया एंड दी एनशिएंट वर्ल्ड, पृ. 103–113*
15. *थापर, रोमिला : अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, दिल्ली, 1977, परिशिष्ट–1*
16. *थापर, रोमिला : अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, दिल्ली, 1977, पृ. 299*
17. *मुकर्जी, राधाकुमुद : चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल, दिल्ली, 1943, पृ. 33–34*
18. *लाहा : दि एज ऑव इम्पीरियल यूनिटी, बंबई, 1960, पृ. 17*
19. *रायचौधुरी, हेमचन्द्र : पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव एन्श्येण्ट इण्डिया, कलकत्ता, 1953, पृ. 194*
20. *गोयल, श्रीराम : मगध साम्राज्य का उदय, 1981, अध्याय 2*
21. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 405*
22. *बील, एस. : लाइस ऑव शुआन– च्यांग, लंदन, 1911, पृ. 93*
23. *गाईल्स, एच. ए. : ट्रैवल्स आफ फाहियान, लंदन, 1923 पृ. 25*
24. *मार्शल : टैक्सिला, खंड 1, लंदन, 1951, पृ. 15*